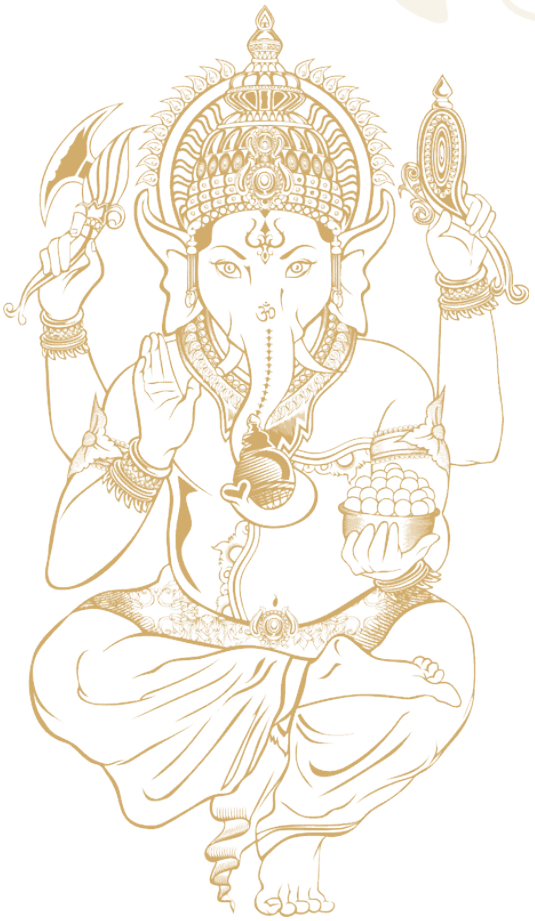

Mr.SNEHA RAMAIYA

23 May 1990

01:45 AM

Parli Vaijnath

Model: All-Dosha-Report **Order No: 119030601**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**22-23/05/1990**
दिवस	मंगळ–बुधवार
जन्म समय	**01:45:00 कला**
इष्ट	49:53:30 घटी
स्थान	**Parli Vaijnath**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:53:00 उत्तर
रेखांश	76:36:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:23:36 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	01:21:24 कला
वेलान्तर	00:03:24 कला
साम्पातिक वेल	17:22:10 कला
सूर्योदय	05:47:36 कला
सूर्यास्त	18:53:06 कला
दिनमान	13:05:31 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्याचे अंश	07:44:32 वृषभ
लग्नाचे अंश	24:12:50 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कुम्भ – शनि
राशि–स्वामी	**मेष – मंगळ**
नक्षत्र–चरण	**भरणी – 1**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	सौभाग्य
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ली–लीना
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	ज्येष्ठ	2
पंजाबी	संवत : 2047	ज्येष्ठ	10
बंगाली	सन् : 1397	ज्येष्ठ	8
तमिल	संवत : 2047	वैकाशी	9
केरल	कोल्लम : 1165	इदवन	9
नेपाली	संवत : 2047	ज्येष्ठ	9
चैत्रादी	संवत : 2047	ज्येष्ठ	कृष्ण 14
कार्तिकादी	संवत : 2047	वैशाख	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 13
तिथि समाप्ति वेल _____: 25:01:38
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 24:25:31 कला
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 07:55:06 कला
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय समयी करण _____: गर
करण समाप्ति वेल _____: 14:50:53 कला
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 03:18:40
भभोग _____: 52:30:30
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 18 वर्ष 8 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिवस _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
रवि _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगळ _____: सिंह
बुध _____: वृषभ
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

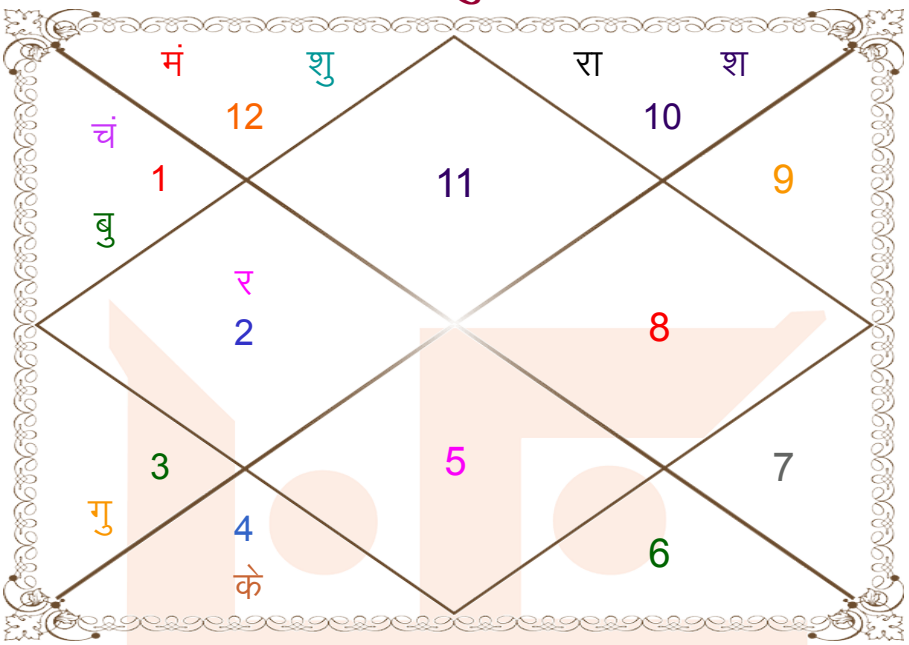

चन्द्र कुंडली

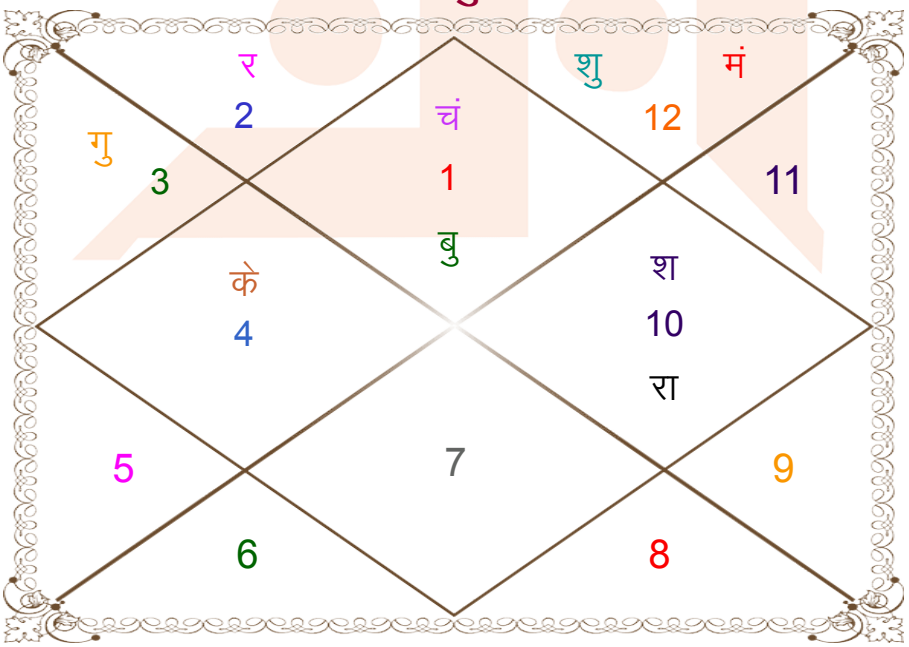

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

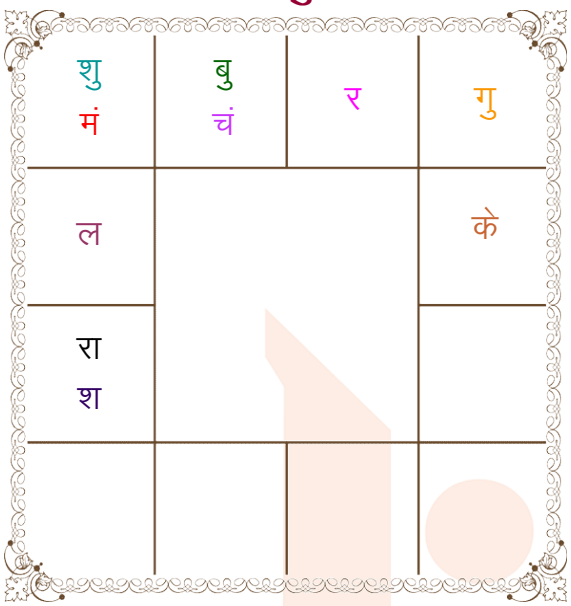

लग्न कुंडली

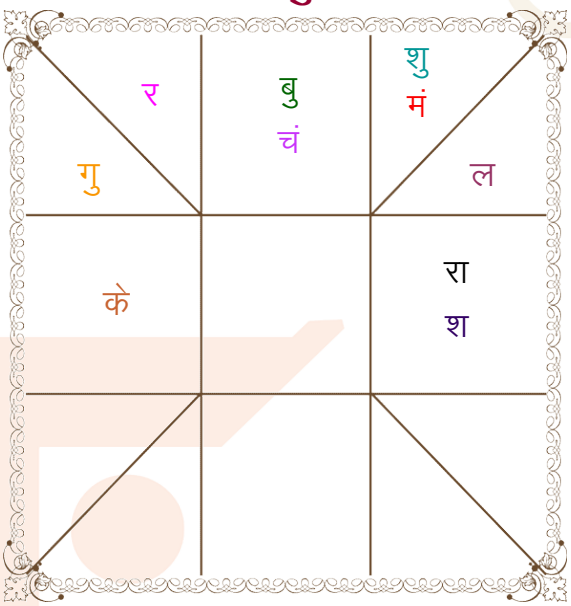

विंशोत्तरी
शुक्र 18वर्ष 8मा 28दि

शुक्र	
23/05/1990	
19/02/2109	
शुक्र	18/02/2009
रवि	19/02/2015
चन्द्र	18/02/2025
मंगळ	19/02/2032
राहु	18/02/2050
गुरु	18/02/2066
शनि	18/02/2085
बुध	19/02/2102
केतु	19/02/2109

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 8मा 7दि

भ्रामरी	
28/01/2022	
28/01/2026	
भ्रामरी	09/07/2022
भद्रिका	28/01/2023
उल्का	29/09/2023
सिद्धा	09/07/2024
संकटा	29/05/2025
मंगळा	09/07/2025
पिंगला	28/09/2025
धान्या	28/01/2026

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	24:12:50	457:30:20	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	----
सूर्य			वृष	07:44:32	00:57:43	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	14:10:12	15:10:08	भरणी	1	2	मंगळ	शुक्र	शुक्र	सम राशि
मंगळ			मीन	00:02:59	00:44:21	पू.भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
बुध			मेष	15:26:41	00:25:47	भरणी	1	2	मंगळ	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मिथु	17:14:14	00:11:52	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	27:30:35	01:09:05	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	उच्च राशि
शनि	व		मक	01:21:25	00:01:42	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	स्वगृही
राहु	व		मक	16:08:22	00:09:27	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	16:08:22	00:09:27	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	मित्र राशि
हर्ष	व		धनु	15:15:36	00:01:45	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	----
नेप	व		धनु	20:30:25	00:01:04	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	----
प्लूटो	व		तुला	22:14:27	00:01:37	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	----
दशम भाव			वृश्चि	27:35:12	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगळ	बुध	गुरु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:43:34

लग्न–चलित

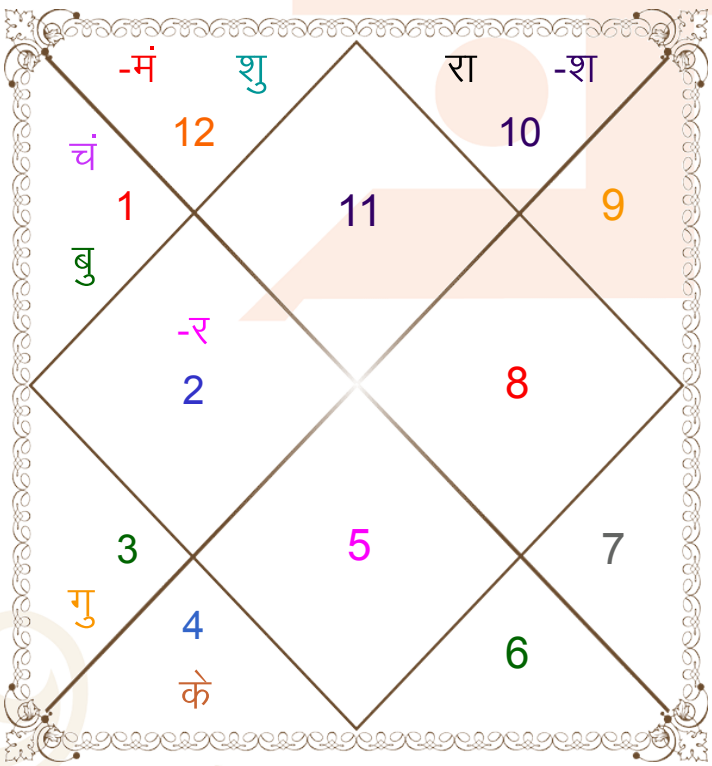

चन्द्र कुंडली

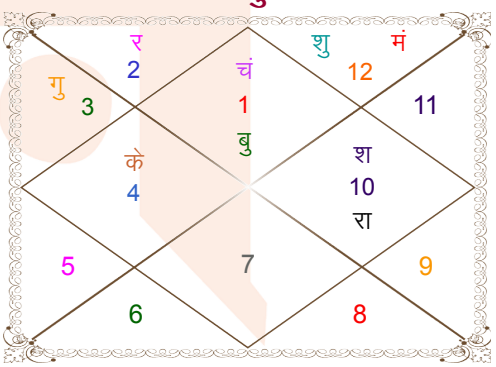

नवमांश कुंडली

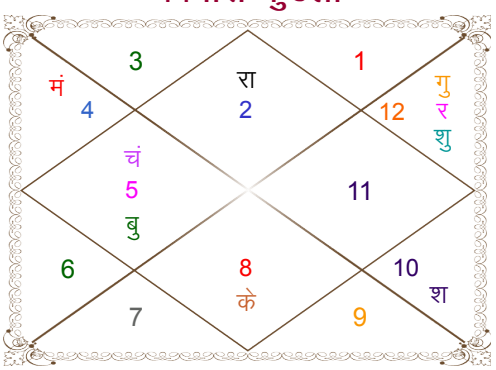

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	09:46:34	कुम्भ	24:12:50
2	मीन	09:46:34	मीन	25:20:18
3	मेष	10:54:01	मेष	26:27:45
4	वृषभ	12:01:28	वृषभ	27:35:12
5	मिथुन	12:01:28	मिथुन	26:27:45
6	कर्क	10:54:01	कर्क	25:20:18
7	सिंह	09:46:34	सिंह	24:12:50
8	कन्या	09:46:34	कन्या	25:20:18
9	तुला	10:54:01	तुला	26:27:45
10	वृश्चिक	12:01:28	वृश्चिक	27:35:12
11	धनु	12:01:28	धनु	26:27:45
12	मकर	10:54:01	मकर	25:20:18

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	24:12:50
2	मेष	00:49:19
3	वृषभ	01:25:39
4	वृषभ	27:35:12
5	मिथुन	22:43:24
6	कर्क	20:27:17
7	सिंह	24:12:50
8	तुला	00:49:19
9	वृश्चिक	01:25:39
10	वृश्चिक	27:35:12
11	धनु	22:43:24
12	मकर	20:27:17

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

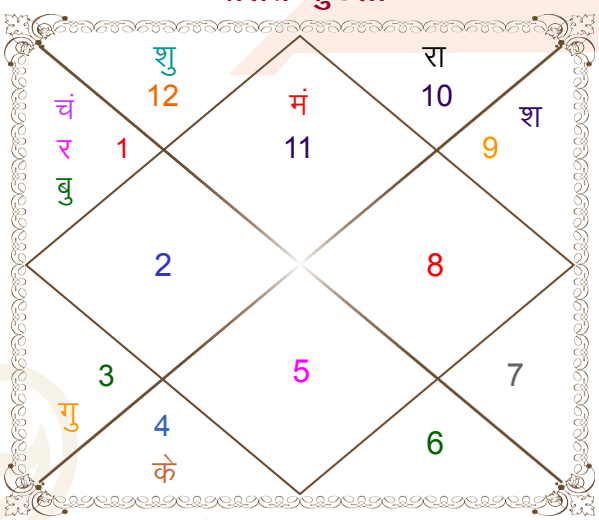

भाव कुंडली

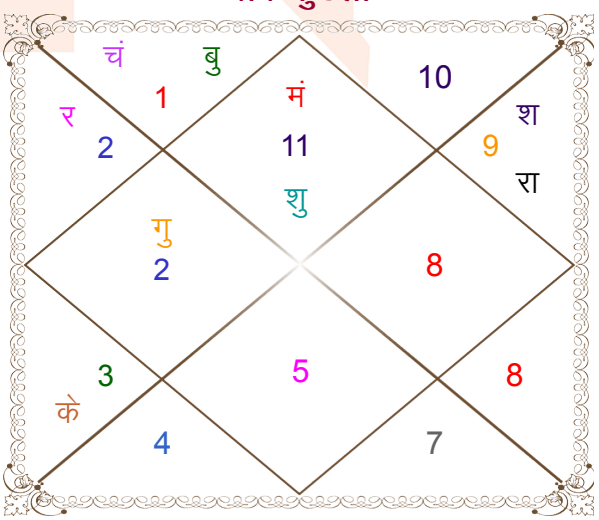

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	8.46	47 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	शक्त	नृत्यलिप्सा	9.67	71 %
मंगळ	कलत्र	भ्रातृ	मृत	मुदित	गमन	5.48	64 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	युवा	शक्त	आगमन	1.01	60 %
गुरु	अमात्य	धन	युवा	खल	उपवेशन	6.31	60 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	दीप्त	आगम	23.93	69 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	मृत	स्वस्थ	गमन	4.53	68 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	मुदित	आगमन	0.00	63 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	मुदित	उपवेशन	0.00	63 %
एकुण						**59.39**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

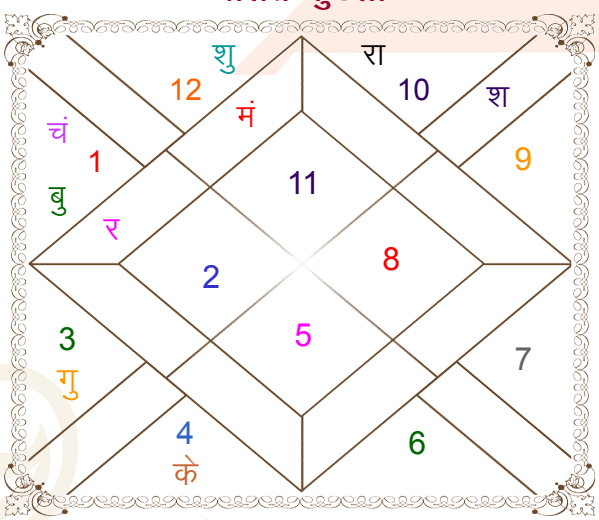

लग्न–चलित

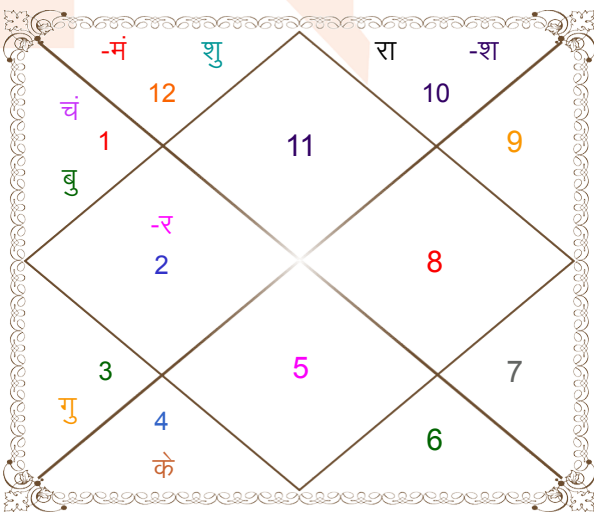

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 18 वर्ष 8 महिना 28 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
23/05/1990		18/02/2009		19/02/2015		18/02/2025		19/02/2032	
18/02/2009		19/02/2015		18/02/2025		19/02/2032		18/02/2050	
शुक्र	20/06/1992	सूर्य	08/06/2009	चंद्र	20/12/2015	मंगळ	17/07/2025	राहु	01/11/2034
सूर्य	20/06/1993	चंद्र	07/12/2009	मंगळ	20/07/2016	राहु	05/08/2026	गुरु	27/03/2037
चंद्र	19/02/1995	मंगळ	14/04/2010	राहु	19/01/2018	गुरु	12/07/2027	शनि	01/02/2040
मंगळ	20/04/1996	राहु	09/03/2011	गुरु	21/05/2019	शनि	19/08/2028	बुध	20/08/2042
राहु	20/04/1999	गुरु	26/12/2011	शनि	19/12/2020	बुध	17/08/2029	केतु	07/09/2043
गुरु	19/12/2001	शनि	07/12/2012	बुध	21/05/2022	केतु	13/01/2030	शुक्र	07/09/2046
शनि	18/02/2005	बुध	14/10/2013	केतु	20/12/2022	शुक्र	15/03/2031	सूर्य	02/08/2047
बुध	20/12/2007	केतु	18/02/2014	शुक्र	19/08/2024	सूर्य	21/07/2031	चंद्र	31/01/2049
केतु	18/02/2009	शुक्र	19/02/2015	सूर्य	18/02/2025	चंद्र	19/02/2032	मंगळ	18/02/2050

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
18/02/2050		18/02/2066		18/02/2085		19/02/2102		19/02/2109	
18/02/2066		18/02/2085		19/02/2102		19/02/2109		00/00/0000	
गुरु	08/04/2052	शनि	21/02/2069	बुध	18/07/2087	केतु	19/07/2102	शुक्र	24/05/2110
शनि	20/10/2054	बुध	01/11/2071	केतु	14/07/2088	शुक्र	18/09/2103		00/00/0000
बुध	25/01/2057	केतु	10/12/2072	शुक्र	15/05/2091	सूर्य	23/01/2104		00/00/0000
केतु	01/01/2058	शुक्र	10/02/2076	सूर्य	20/03/2092	चंद्र	24/08/2104		00/00/0000
शुक्र	01/09/2060	सूर्य	22/01/2077	चंद्र	20/08/2093	मंगळ	20/01/2105		00/00/0000
सूर्य	20/06/2061	चंद्र	23/08/2078	मंगळ	17/08/2094	राहु	07/02/2106		00/00/0000
चंद्र	20/10/2062	मंगळ	02/10/2079	राहु	05/03/2097	गुरु	14/01/2107		00/00/0000
मंगळ	26/09/2063	राहु	08/08/2082	गुरु	11/06/2099	शनि	23/02/2108		00/00/0000
राहु	18/02/2066	गुरु	18/02/2085	शनि	19/02/2102	बुध	19/02/2109		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 18 वर्ष 8 मा 26 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु	
17/07/2025		05/08/2026		12/07/2027		19/08/2028		17/08/2029	
05/08/2026		12/07/2027		19/08/2028		17/08/2029		13/01/2030	
राहु	13/09/2025	गुरु	19/09/2026	शनि	14/09/2027	बुध	10/10/2028	केतु	25/08/2029
गुरु	03/11/2025	शनि	12/11/2026	बुध	10/11/2027	केतु	31/10/2028	शुक्र	19/09/2029
शनि	03/01/2026	बुध	30/12/2026	केतु	04/12/2027	शुक्र	30/12/2028	सूर्य	27/09/2029
बुध	26/02/2026	केतु	19/01/2027	शुक्र	09/02/2028	सूर्य	17/01/2029	चंद्र	09/10/2029
केतु	20/03/2026	शुक्र	17/03/2027	सूर्य	29/02/2028	चंद्र	17/02/2029	मंगळ	18/10/2029
शुक्र	23/05/2026	सूर्य	03/04/2027	चंद्र	03/04/2028	मंगळ	10/03/2029	राहु	09/11/2029
सूर्य	11/06/2026	चंद्र	02/05/2027	मंगळ	27/04/2028	राहु	03/05/2029	गुरु	29/11/2029
चंद्र	13/07/2026	मंगळ	22/05/2027	राहु	27/06/2028	गुरु	20/06/2029	शनि	23/12/2029
मंगळ	05/08/2026	राहु	12/07/2027	गुरु	19/08/2028	शनि	17/08/2029	बुध	13/01/2030

मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
13/01/2030		15/03/2031		21/07/2031		19/02/2032		01/11/2034	
15/03/2031		21/07/2031		19/02/2032		01/11/2034		27/03/2037	
शुक्र	25/03/2030	सूर्य	21/03/2031	चंद्र	08/08/2031	राहु	16/07/2032	गुरु	26/02/2035
सूर्य	15/04/2030	चंद्र	01/04/2031	मंगळ	20/08/2031	गुरु	24/11/2032	शनि	15/07/2035
चंद्र	21/05/2030	मंगळ	08/04/2031	राहु	21/09/2031	शनि	29/04/2033	बुध	16/11/2035
मंगळ	15/06/2030	राहु	28/04/2031	गुरु	19/10/2031	बुध	16/09/2033	केतु	06/01/2036
राहु	17/08/2030	गुरु	15/05/2031	शनि	22/11/2031	केतु	13/11/2033	शुक्र	31/05/2036
गुरु	13/10/2030	शनि	04/06/2031	बुध	22/12/2031	शुक्र	26/04/2034	सूर्य	14/07/2036
शनि	20/12/2030	बुध	22/06/2031	केतु	04/01/2032	सूर्य	14/06/2034	चंद्र	25/09/2036
बुध	18/02/2031	केतु	29/06/2031	शुक्र	08/02/2032	चंद्र	05/09/2034	मंगळ	15/11/2036
केतु	15/03/2031	शुक्र	21/07/2031	सूर्य	19/02/2032	मंगळ	01/11/2034	राहु	27/03/2037

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
27/03/2037		01/02/2040		20/08/2042		07/09/2043		07/09/2046	
01/02/2040		20/08/2042		07/09/2043		07/09/2046		02/08/2047	
शनि	07/09/2037	बुध	12/06/2040	केतु	11/09/2042	शुक्र	08/03/2044	सूर्य	24/09/2046
बुध	02/02/2038	केतु	05/08/2040	शुक्र	14/11/2042	सूर्य	02/05/2044	चंद्र	21/10/2046
केतु	04/04/2038	शुक्र	07/01/2041	सूर्य	03/12/2042	चंद्र	01/08/2044	मंगळ	09/11/2046
शुक्र	24/09/2038	सूर्य	23/02/2041	चंद्र	04/01/2043	मंगळ	04/10/2044	राहु	29/12/2046
सूर्य	15/11/2038	चंद्र	11/05/2041	मंगळ	27/01/2043	राहु	18/03/2045	गुरु	10/02/2047
चंद्र	10/02/2039	मंगळ	05/07/2041	राहु	25/03/2043	गुरु	11/08/2045	शनि	03/04/2047
मंगळ	12/04/2039	राहु	21/11/2041	गुरु	15/05/2043	शनि	31/01/2046	बुध	20/05/2047
राहु	15/09/2039	गुरु	26/03/2042	शनि	15/07/2043	बुध	05/07/2046	केतु	08/06/2047
गुरु	01/02/2040	शनि	20/08/2042	बुध	07/09/2043	केतु	07/09/2046	शुक्र	02/08/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
02/08/2047		31/01/2049		18/02/2050		08/04/2052		20/10/2054	
31/01/2049		18/02/2050		08/04/2052		20/10/2054		25/01/2057	
चंद्र	17/09/2047	मंगळ	22/02/2049	गुरु	02/06/2050	शनि	01/09/2052	बुध	14/02/2055
मंगळ	19/10/2047	राहु	21/04/2049	शनि	04/10/2050	बुध	10/01/2053	केतु	03/04/2055
राहु	09/01/2048	गुरु	11/06/2049	बुध	22/01/2051	केतु	05/03/2053	शुक्र	19/08/2055
गुरु	22/03/2048	शनि	11/08/2049	केतु	08/03/2051	शुक्र	06/08/2053	सूर्य	30/09/2055
शनि	17/06/2048	बुध	04/10/2049	शुक्र	16/07/2051	सूर्य	22/09/2053	चंद्र	08/12/2055
बुध	02/09/2048	केतु	26/10/2049	सूर्य	24/08/2051	चंद्र	08/12/2053	मंगळ	25/01/2056
केतु	04/10/2048	शुक्र	29/12/2049	चंद्र	28/10/2051	मंगळ	31/01/2054	राहु	28/05/2056
शुक्र	03/01/2049	सूर्य	17/01/2050	मंगळ	13/12/2051	राहु	18/06/2054	गुरु	16/09/2056
सूर्य	31/01/2049	चंद्र	18/02/2050	राहु	08/04/2052	गुरु	20/10/2054	शनि	25/01/2057

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ	
25/01/2057		01/01/2058		01/09/2060		20/06/2061		20/10/2062	
01/01/2058		01/09/2060		20/06/2061		20/10/2062		26/09/2063	
केतु	14/02/2057	शुक्र	12/06/2058	सूर्य	15/09/2060	चंद्र	30/07/2061	मंगळ	09/11/2062
शुक्र	11/04/2057	सूर्य	31/07/2058	चंद्र	10/10/2060	मंगळ	28/08/2061	राहु	30/12/2062
सूर्य	29/04/2057	चंद्र	20/10/2058	मंगळ	27/10/2060	राहु	09/11/2061	गुरु	13/02/2063
चंद्र	27/05/2057	मंगळ	16/12/2058	राहु	09/12/2060	गुरु	13/01/2062	शनि	08/04/2063
मंगळ	16/06/2057	राहु	11/05/2059	गुरु	17/01/2061	शनि	31/03/2062	बुध	27/05/2063
राहु	06/08/2057	गुरु	18/09/2059	शनि	05/03/2061	बुध	08/06/2062	केतु	15/06/2063
गुरु	20/09/2057	शनि	19/02/2060	बुध	15/04/2061	केतु	06/07/2062	शुक्र	11/08/2063
शनि	13/11/2057	बुध	06/07/2060	केतु	02/05/2061	शुक्र	26/09/2062	सूर्य	28/08/2063
बुध	01/01/2058	केतु	01/09/2060	शुक्र	20/06/2061	सूर्य	20/10/2062	चंद्र	26/09/2063

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
26/09/2063		18/02/2066		21/02/2069		01/11/2071		10/12/2072	
18/02/2066		21/02/2069		01/11/2071		10/12/2072		10/02/2076	
राहु	04/02/2064	शनि	11/08/2066	बुध	10/07/2069	केतु	25/11/2071	शुक्र	21/06/2073
गुरु	31/05/2064	बुध	14/01/2067	केतु	06/09/2069	शुक्र	31/01/2072	सूर्य	18/08/2073
शनि	17/10/2064	केतु	19/03/2067	शुक्र	17/02/2070	सूर्य	21/02/2072	चंद्र	22/11/2073
बुध	18/02/2065	शुक्र	18/09/2067	सूर्य	07/04/2070	चंद्र	25/03/2072	मंगळ	29/01/2074
केतु	10/04/2065	सूर्य	12/11/2067	चंद्र	28/06/2070	मंगळ	18/04/2072	राहु	21/07/2074
शुक्र	03/09/2065	चंद्र	12/02/2068	मंगळ	24/08/2070	राहु	18/06/2072	गुरु	22/12/2074
सूर्य	17/10/2065	मंगळ	16/04/2068	राहु	19/01/2071	गुरु	11/08/2072	शनि	23/06/2075
चंद्र	29/12/2065	राहु	28/09/2068	गुरु	30/05/2071	शनि	14/10/2072	बुध	04/12/2075
मंगळ	18/02/2066	गुरु	21/02/2069	शनि	01/11/2071	बुध	10/12/2072	केतु	10/02/2076

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	5
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 9, 2
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिवस	शुक्र, शनि, मंगळ
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगळ
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृषभ, तुला, धनु
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	लाजवर्त, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, काली गाय, खडाउ
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	91%	धन, सुख, भाग्योदय
पुष्कराज	गुरु	77%	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
पोवले	मंगळ	70%	धन, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	62%	कम खर्च, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	55%	सुख, दम्पति
पन्ना	बुध	55%	पराक्रम, सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
लहसुनिया	केतु	22%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
गोमेद	राहु	6%	व्यय
मोती	चंद्र	3%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

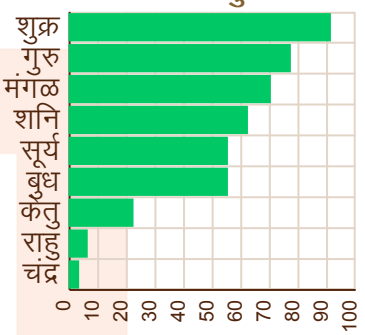

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	18/02/2009	34%	0%	70%	61%	77%	100%	68%	19%	34%
सूर्य	19/02/2015	67%	16%	77%	55%	83%	78%	49%	0%	0%
चंद्र	18/02/2025	61%	28%	70%	61%	77%	91%	62%	0%	0%
मंगळ	19/02/2032	61%	16%	83%	34%	83%	91%	62%	0%	34%
राहु	18/02/2050	34%	0%	58%	55%	77%	97%	68%	31%	0%
गुरु	18/02/2066	61%	16%	77%	34%	89%	78%	62%	6%	22%
शनि	18/02/2085	34%	0%	58%	61%	77%	97%	75%	19%	0%
बुध	19/02/2102	61%	0%	70%	67%	77%	97%	62%	6%	22%
केतु	19/02/2109	34%	0%	77%	55%	77%	97%	49%	0%	47%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थस्थान चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टमस्थान चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टमस्थान चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	धन
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	सुख
चतुर्थस्थान चरण	सम	शत्रु से कष्ट
अष्टमस्थान चरण	सम	व्यावसायिक परेशानी

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म काल मधे मंगळ ची स्थिति कुंडळी मधे द्वादश भावात आहे अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे, पण चंद्र पासून मांगळिक दोष जास्ती नाय होतात. या मुळे यांचा प्रभाव पासून तुमची वृत्ति काही खर्ची ची वृत्ति होणारी या मुळे काही आर्थिक त्रास पण होउ सकतात पण यांचा प्रभाव जास्ती नाय होणार, तसेच सामान्य धन पण एकत्रि होणार. शारीरा चा स्वास्थ मध्यम रहणार पण मनाची त्रास कधीं–मधीं होउ सकतात. सांसारिक महत्वपूर्ण कार्य मधे अडचणे पण उत्पन्न होणारी. पण यांचे सामना कराय ची क्षमता स्वतः ची होणारी नवरा चा स्वास्थ्य पण चांगळा रहणार पण कधीं–मधीं स्वभावात काही उष्णता होइळ पण जास्ती दुष्प्रभाव नाय होणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी रहणार. असा मंगळ चा प्रभावा पासून तुमचे विवाह उशीर होणार पण सफळ होणार विवाह अगोदर ची काही गोष्ठ साठी अडचणे उत्पन्न होउ सकतात विवाह नंतर दांपत्य जीवन अनुकूळ आणि सुखी रहणार. चंद्र कुंडळी मधे द्वादश स्थित मंगळ प्रभावा पासून आपण खर्चे जास्ती करणारी पण यांचा काही दुष्प्रभाव नाय होणार सांसारिक कार्याळा उत्पंन अडचणे आणि त्रास चा सामना तसेच समाधान कराय साठी सफलळ होणारी. तृतीय भावात मंगळ दृष्टि पासून भाऊ ताई चा सुख सामान्य, पराक्रम तसेच अत्म बळा चे वृद्धि होणारी तुमचे लाभ आणि उन्नति चे मार्ग नेहमी ठोस रहणारे. षष्ठ भावात मंगळ दृष्टि पासून शत्रु वर्ग वर विजय प्राप्त कराय ची सफळता मिलणार पण कधीं–मधीं उष्णता आणि पित्त उत्पन्न होउ सकतात सप्तम भावात मंगळ ची दृष्टि नवरा चा स्वभाव आणि स्वास्थ्य मध्यम ठेवणार. कधीं–मधीं उष्णता पण होणारी पण दांपत्य जीवन सुखी होणार. ह्या प्रकारी दम्पती जीवन जास्ती सुखी साठी कोणी मांगळिक पुरुष पासून विवाह करायळा पाहिजे. ज्यांचा मांगळिक दोष भंग होतात आणि कुंडळीत मंगळ प्रथम चतुर्थ, सप्तम, अष्टम द्वादश भावात शनि, राहु सारखा पापी ग्रहांची स्थित होणार पाहिजे असा होण्या वर आपण आपले दांपत्य जीवना चा उपभोग करणारे तसेच सुख सहयोग देणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से

छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म कुंभ लग्नी झाला आहे, त्यामुळे आरोग्याच्या घ्ष्टीने स्वस्थ असाल तसेच शरीरामध्ये बळदेखील असेल. मनामध्ये चांचल्य असेल, पण व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल, आणि त्यामुळे आपले अनेक मित्र बनतील. आपण एक आधुनिक व क्रांतीकारी विचारांची व्यक्ती असाल आणि जुन्या रीतिरिवाजांची संपूर्ण उपेक्षा कराल, त्याचबरोबर काही रूढ रिवाज समाजातून नष्ट करण्यासाठी तुम्ही क्रांती किंवा आंदोलन सुद्धा करण्याचा विचार कराल. समाजाबद्दल आपल्या मनामध्ये प्रेम व सहानुभूती असेल, पण आपणहून लोकांशी मिसळणार नाही. धर्मावर विशेष रूची असणार नाही तसेच धार्मिक नेत्यांचे मार्गदर्शन किंवा शिक्षणाचा आपल्यावर काही प्रभाव पडणार नाही. आधुनिक प्रश्न व समस्यांचा प्राचीन समस्यांशी तुलनात्मक अभ्यास करण्याचा प्रयत्न कराल. साहित्य व कलेमध्ये रूची असेल तसेच उत्तम वक्तासुद्धा होऊ शकाल. मन कोमल असेल. तुम्ही शुभ व महत्वाची कामे हळुहळू पण कष्टाने पूर्ण कराल. याव्यतिरिक्त न्याय भावना प्रबळ असेल तसेच भौतिक सुख साधनानी युक्त होऊन त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल.

आपला सांसारिक घष्टिकोन विशाल असेल आणि आधुनिकतेची पूर्ण छाप असेल. कोणतेही काम किंवा व्यसन उन्मुक्तपणे लोकांच्या सान्निध्यात पूर्ण कराल, त्यामुळे तुम्हाला श्रेष्ठ अशा व्यक्ती नाखुश असतील. अभ्यासामध्ये रूचि असेल आणि कष्टाने शास्त्रांचे अध्ययन करून त्यात विद्वत्ता प्राप्त कराल. समाज किंवा इतरेजनांची दौर्बल्य समजण्यामध्ये चतुर असाल आणि अनेकदा या दुर्बलतेचा फायदा घेऊन कोणतेही आंदोलन किंवा इतर कार्य प्रारंभ कराल. नेतृत्वसुद्धा मिळू शकते. भावुकतेचा अभाव असेल आणि स्वच्छंद व स्वतंत्रपणे प्रापंचिक कामे पूर्ण कराल. सूक्ष्म घष्टीसुद्धा असल्याने इतरेजनांना प्रभावित करू शकाल. त्यामुळे समाजात अपेक्षित मानसन्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होईल. प्रेमळ स्वभाव असेल. इच्छाशक्ती प्रबळ असेल व प्रवृत्ती एकांतप्रिय असेल. परंतु आयुष्यात धनार्जन करण्यासाठी अतिशय कष्ट घ्यावे लागतील. आपले गुप्त शत्रू किंवा त्यांच्या गुप्त कृत्यांहून तुम्हाला धनार्जन करण्यात समस्या येईल. कुटुंब तसेच पत्नीकडून पूर्ण सुख व आनंद मिळेल, पण मित्रांकडून सुख कमी मिळेल. प्रवास भरपूर होईल आणि भावाकडून व्यापारात त्रास होऊ शकतो. आयुष्यात कधी कधी अवडंबर दाखवाल पण अभ्यासू, ज्ञानी, कष्टाळू व सूक्ष्म हृदयी असल्याने काळ आनंदात घालवाल. यथोक्तम –

लोलस्वान्तोळतयन्तसन्जातकामश्चंचछेहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे।
सस्यारम्भःसम्भ वैर्युक्सदम्भश्रेत्यात्कुम्भे संभवो यस्य लग्ने।।

– जातकाभरणम

म्हणजे कुंभ लग्नामध्ये जन्मलेला मनुष्य चंचल, कामी व रूपवान असतो. मित्रांशी प्रेमळ, धन्यादि उपार्जन करणारा व अवडंबरी असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण दार्शनिक वृत्ती तसेच स्वप्नघ्टा प्रवृत्ती असेल. स्पष्टवक्ते असल्याने आपले विचार इतरांसमोर स्पष्टपणे मांडाल. अत्यंत उदार स्वभाव असल्याने समाजाची सेवा व मदत करण्यास नेहमी तत्पर असाल. स्वभावाने विनम्र असाल आणि अनोळखी व्यक्तीसुद्धा पहिल्या भेटीतच आपला मित्र होण्यास उत्सुक असेल. आपले विचार व्यक्त करताना आपल्या श्रोत्यांच्या इच्छेनुसार आपल्या वक्तव्याला नवे रूप देण्याची क्षमता असेल, ज्यामुळे लोक अत्यंत प्रभावित होतील, पण कधी कधी आत्मविश्वास ढासळेल.

कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धी चांगली असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपल्या विचारांमध्ये बदल घडवाल. आपल्याला सुंदर व स्वादिष्ट भोजन आवडते, त्यातही गोड व चटपटीत स्वाद विशेष प्रिय आहे. सामान्यपणे तुमची आवड इतरांपेक्षा भिन्न असेल. वाणीमध्ये माधुर्य असेल तसेच नैसर्गिक घ्ष्ये पाहणे आवडते. जमीन, मालमत्ता, वाहन तसेच बहुमूल्य वस्तू प्राप्त कराल. अचानक धनप्राप्ती व आई–वडिलांची संपत्तीमुळे धनवान व्हाल आणि सुखाने आयुष्य जगाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व चांगल्या स्वभावाची असेल. शांत स्वभावामुळे पतीशी त्यांचे चांगले संबंध असतील. आनंदाने गृहस्थी जीवनाचे पालन करेल आणि कुटुंबाला सुख देण्याचा प्रयत्न करेल. कर्तव्यनिष्ठ आईच्या रूपात मुलांची पूर्ण काळजी घेईल आणि प्रेमाने पालनपोषण करेल. त्यामुळे तुम्ही सर्व मुले आयुष्यभर आईचे ऋणी असाल. तुम्हीसुद्धा आईला पूर्ण सुख व सहयोग करून श्रद्धेने तिची सेवा कराल.

तुमचे घर सुंदर व आकर्षक असेल. सर्व आधुनिक सुखसुविधा प्राप्त कराल व सर्व भौतिक उपकरणांनी घर सुसज्ज असेल आणि शांत व आनंदाने कौटुंबिक जीवन घालवाल. उच्च शिक्षणामध्ये आपल्याला किंचित समस्यांना तोंड द्यावे लागेल, पण बुद्धिमान व्यक्ती या नात्याने कष्टाने उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. लेखनामध्ये रस असेल आणि त्यातून प्रसिद्धी मिळवाल. स्पर्धात्मक परिक्षेत यश मिळवाल. साधु–महात्म्यांच्या कृपेमधून काही गुप्त विद्यासुद्धा प्राप्त करू शकाल, तसेच ज्योतिष, तंत्र, मंत्रामध्ये रस असेल. आपल्या बुद्धि आणि पात्रतेच्या जोरावर एखादे उच्च पद प्राप्त कराल व आनंदाने संयम व कष्टाने सुख प्राप्त कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व प्रतिभाशाली व्यक्ती असाल. त्याचबरोबर शैक्षणिक यश पूर्णपणे प्राप्त कराल. कुशाग्र बुद्धि असल्याने कोणताही विषय पटकन आत्मसात कराल. त्यामुळे उत्तम यश मिळवाल. द्विस्वभाव राशीमुळे जीवनात बदल आवडतो. हा सिद्धांत तुम्ही प्रेम व शृंगारामध्येसुद्धा लागू करण्यात तुम्हाला आनंद मिळतो. भावनांवर विचारांनी नियंत्रण ठेवत असल्याने चूक क्वचितच होईल. प्रेम किंवा मायासुद्धा बुद्धिच्या घ्ष्टीने पाहाल. विवाह आपल्यासाठी एक उत्तेजित व इच्छित कार्य असेल. पतीसुद्धा बुद्धिमान असल्याने दाम्पत्य जीवन सुखी जाईल.

मुले असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहयोग मिळेल. त्यांची पूर्ण काळजी घ्याल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यात मुले यशस्वी ठरतील, वृद्धावस्थेत तुमची सेवा करतील आणि त्यांच्याकडून तुम्हाला कोणतेही कष्ट होणार नाहीत. सरकारकडून करांबाबतीत त्रास होऊ शकत असल्याने हिशोब नीट ठेवावा. जुन्या परंपरांना कधी कधी स्वीकाराल तसेच वैदिक व ज्योतिष ज्ञानसुद्धा प्राप्त कराल. संतती गुणवान, शील स्वभावाची असेल. लोकांशी प्रेमाने वागून मानसन्मान मिळवेल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपला पती आकर्षक व्यक्तिमत्वाचा असेल, पण स्वभाव उग्र व तीक्ष्ण असेल. सुशिक्षित असेल. दोघेही समान बुद्धिमान असाल, त्यामुळे दाम्पत्य जीवन चांगले जाईल. समानतेवर तुमचा विश्वास असल्याने आपला जीवनसाथी प्रामाणिक व सरळ स्वभावाचा असावा असे आपल्याला वाटते. साहजिकच कुटुंबामध्ये सुख, शांती, समृद्धि राखण्याचा सदैव प्रयत्न कराल.

आपण एक बुद्धिमान तसेच सक्रीय व्यक्ती आहात तसेच संशोधन किंवा आपल्या कामात व्यस्त राहाणे आवडते. त्यामुळे कुटुंब किंवा पतीला यथोचित वेळ देणे आपल्याला शक्य होणार नाही. यातून अनेकदा परस्परांमध्ये विवाद व मतभेद निर्माण होण्याची शक्यता असल्याने अशी स्थिती शक्यतो उत्पन्न होऊ देऊ नका. मिथुन, कन्या लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाहसंबंध किंवा मैत्री, व्यापारामध्ये आदर्श भागीदारी होऊ शकते. कौटुंबिक सुखाच्या प्राप्तीसाठी पैसा हे मुख्य साधन असे आपण मानता. व्याख्याता, ज्योतिषी, खाण, कंत्राटदारी, वंशपरंपरागत व्यवसाय तसेच रासायनिक वस्तूंचा व्यापार किंवा संबंधित विभागामध्ये नोकरी आपल्यासाठी किंवा पतीसाठी लाभदायक ठरेल. याव्यतिरिक्त आपला पती उग्र स्वभावाचा, अधिक पैशाची अपेक्षा ठेवणारा, कार्यतत्पर असल्याने दाम्पत्य जीवन सामान्यपणे चांगले जाईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य साधारण असेल आणि मानसिक घ्ष्ट्या त्रासलेले असतील, पण पराक्रमी, साहसी, घ्ढनिश्चयी असतील. आर्थिक बाबतीत ते भाग्यवान असतील आणि त्यांना अपेक्षित वस्तू नेहमी प्राप्त होतील. व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल आणि समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठा मिळेल.

जीवनात अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त करण्यासाठी आपण विज्ञान, कार्यकारी पद तसेच प्रसिद्ध उद्योगामध्ये उच्चपदावर नियुक्त होऊ शकाल. व्यापार, ज्योतिष, कायदा, आर्थिक किंवा शिक्षण सल्लागाराच्या रूपानेही आपण यशस्वी होऊ शकाल. औषधीसंबंधी कार्यातूनसुद्धा आपल्याला उचित लाभ मिळेल. आपले काम शांत व कष्टाने करण्याचा प्रयत्न कराल. व्यवसायात यशस्वी होण्यामागे हेच इंगित असेल. राजकारणात प्रवेश करण्याची तीव्र इच्छा असली तरी त्यात यश थोडेच मिळेल. आर्थिक बाबी तसेच कोणतीही योजना पूर्ण करण्यासाठी सहकारी मदत मिळेल. वडिलांच्या आज्ञेत असाल. आपण सत्कर्मी, धार्मिक खर्च करणारे पण कधी कधी कठोर वागाल.

फलादेश - 2025

ह्यावर्षी गोचरीने तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून आर्थिकदृष्टया ळाभ होईळ. साहितय व दर्शनशास्त्राची तुम्हाळा आवड निर्माण होईळ व त्याचे अध्ययन कराळ. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून सहकार्य व ळाभ होईळ व नवीन मित्र बनवाळ. त्याचबरोबर त्यातून भविष्यकाळात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. शारीरिक व मानसिकदृष्टया तुम्ही प्रसनन असाळ. संकीर्णता दूर होऊन विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. त्यामुळे सामाजिक दर्जा वाढेळ. अन्य गोचर व दशाफळ अशुभ असल्याने शुभ फळांमध्ये कमतरता येईळ त्यामुळे परिश्रम करावे ळागतीळ.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्नता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू एकादश भावात तर केतू पंचमात असेळ. त्यमुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात तुम्ही यंदा सफळता मिळवाळ. नोकरी किंवा राजकारणात पदप्राप्ती संभवते. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष शुभ असेळ. धनवृद्धी संभवते. ज्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. पण स्वभावात रात्रीटपणा असेळ. वेळोवेळी क्रोध दर्शवाळ. मुळांची चिंता कराळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर व दशा पण अशुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळतीळ. तरी धीराने कार्य करावे.

मंगळ ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 17/07/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण राहु द्वादश भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी मध्यम आहे अतः शुभ अशुभ दोनी फळ प्राप्त होणार पण अशुभ फळ जास्ती प्राप्त होणार. कुटुम्ब शान्ती नाय रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार स्वास्थ्य पण प्रभावित होउ सकतो. आणि मोठे अधिकारयां पासून मतभेद रहणार विशेष कार्य सिद्धी साठी उशीर होणारी अनावश्यक प्रवास पण होणार आणि गुस्से जास्ती उत्पन्न होणार कार्य क्षेत्र मधे उन्नती सामान्य रहणार ह्या प्रकारी समय शुभ नाय आहे अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः इच्छि प्रयोजने सफळ नाय होणारी आणि सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल नाय रहणार तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ

सकतो आणि पदोन्नति साठी अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती प्रभावित होणारी तसेच सहयोग पण नाय भेंटणार, पण सामाजिक सम्मान यश भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साठी खर्चे क नळा आणि कोणी वर विश्वास नळा करावे, बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो जमीन, सम्बन्धी काही तरी मतभेद किंवा त्रास उत्पन्न होऊ सकतो.

फलादेश - 2026

ह्या वर्षी गुरु गोचरीने चतुर्थ भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष सामान्यताः चांगळे असेळ. प्रकृतीच्या दृष्टीने काळ चांगळा आहे. मानसिकदृष्टया समाधानी असाळ. कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. यंदा तुमच्या मनातीळ योजना व कार्ये सफळ होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. परिश्रमाने ळाभ व धनप्राप्ती होईळ. फळतः आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. ह्या काळात मित्र व बांधवांकडून सहकार्य मिळेळ. माळमत्ता व वाहनविषयक पण ह्या काळात मिळू शकते. ह्या वर्षी आई व सासरच्या ळोकांकडून ळाभ संभवतो. पण मिळकतीच्या दृष्टीने गोचरफळ व दशाफळ प्रतिकूळ असल्याने चांगळी फळे कमी मिळतीळ, व तुम्हाळा संघर्ष आणि परिश्रम जास्त करावे.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्नता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू एकादश भावात तर केतू पंचमात असेळ. त्यमुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात तुम्ही यंदा सफळता मिळवाळ. नोकरी किंवा राजकारणात पदप्राप्ती संभवते. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष शुभ असेळ. धनवृद्धी संभवते. ज्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. पण स्वभावात रात्रीटपणा असेळ. वेळोवेळी क्रोध दर्शवाळ. मुळांची चिंता कराळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर व दशा पण अशुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळतीळ. तरी धीराने कार्य करावे.

मंगळ ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 05/08/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु द्वादश भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु पंचम भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ नाय रहणार अतः इच्छित परिणाम नाय भेंटणारे. कुटुम्ब मधे आशान्ती रहणारी आणि परस्पर सहयोग नाय भेंटणार आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होणार. व्यापार साठी समय अनुकूल नाय रहणार कधीं–मधीं घाटे पण होऊ सकतो नोकरी मधे पदोन्नति साठी अडचणे उत्पन्न होणारी. कधीं–मधीं अनावश्यक प्रवास होणारी म्हणून मानसिक त्रास उत्पन्न होणार. समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी. अतः धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः कार्य क्षमता मधे कमी होणारी. महत्वपूर्ण कार्य मधे अडचणे येणारी व्यापार मधे लाभ नाय होणार तसेच घाटे

पण होउ सकतो आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी. कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार. अविवाहित लोकां चे विवाह मधे अडचणे येणारी मित्र पासून सहयोग नाय भेंटणार समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी शत्रु अडचणे उत्पन्न करणारे अतः धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

मंगळ ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 12/07/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु पंचम भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण शनि द्वादश भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

तुमचा साठी हा समय शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः व्यापार क्षेत्र मधे फार अडचणे येणारी आणि घाटे पण होउ सकतो. संगी कळा साहित्य मधे सफळता नाय भेंटणारी वर्तमान क्षेत्रातीळ विस्तार किंवा उन्नती असम्भव आहे. नौकरी मधे अधिकारंया बरोबर मतभेद रहणार आणि सम्पर्क मधे कमी होणारी मोठे अधिकारयां बरोबर मतभेद रहणार. काही तरी प्रवास

पासून लाभ प्राप्त होणार आणि भविष्य साठी नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी अतः वुद्धि आणि धैर्य बरोवर कार्य करावें.

शनि अंतर्दशा मधे हा समय सामान्य मिश्रित आहे पण अशुभ फळ जास्ती भेंटणार, अध्ययन आणि मनोविज्ञान मधे चि उत्पन्न होणारी आणि खूप परिश्रम होणार. हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूळ नाय रहणार अतः नेहमी अडचणे उत्पन्न होऊ सकतो. परिश्रम केल्या नंतर पण पूर्ण सफळता नाय भेंटणारी व्यापार मधे चांगला परिणाम भेंटणार पण व्यापार मधे फार परिश्रम होणार. ह्या वेळी आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मत भेद रहणार कुटुम्ब मधे सुख शान्ती ची कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार असे समय वर शत्रु पासून सावध रहावे तसेच जोखम कार्य पासून पण सावध रहा. आणि बुद्धि बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

मंगळ ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 19/08/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि द्वादश भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहे। पण बुध तृतीय भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः शुभ कार्य मधे अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी आय श्रोत मधे कमी रहणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होउ सकतो. नवीन कार्य मधे असे समय वर असफळ होउ सकतो नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार. अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होउ सकते मित्र बरोवर विशेष सहयोग नाय भेंटणार पण सामाजिक प्रतिष्ठा चांगली रहणारी अतः असे समय वर धैर्य बरोवर कार्य कराय ला पाहिजे. असे समय वर कोणी वर विश्वास नाय कराय ला पाहिजे, आणि स्वास्थ्य वर काळजी ठेवाय ला पाहिजे जोखम कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. धर्म कार्य

मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी आणि तीर्थ प्रवास होणारी.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे, अतः साहस आणि आत्मविश्वास मधे कमी रहणारी. आणि प्रतिकूल परिस्थित उत्पन्न होणारी. आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी फालतू प्रवास होणारी आणि कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी मित्र पासून सम्पर्क कम रहणार. भाउ ताई चा कार्य क्षेत्र प्रभावित होणार.मानसिक अशान्ती रहणारी प्रतियोगी परीक्षा मधे सफळ रहणारी पण असे समय चा सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

मंगळ ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 17/08/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध तृतीय भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण केतु षष्ठ भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूल नाय आहे अतः शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य सफळ नाय होणार. आर्थिक स्थिति पण चांगळी नाय रहणारी आर्थिक त्रास होउ सकतो. व्यापार मधे कोणी विशेष लाभ नाय होणार. नोकरी मधे उन्नती साठी उशीर होउ सकतो. कोणी विशेष सम्पर्क पासून काही शान्ती आणि संतुष्टि अनुभव करणारी कुटुम्ब मधे परस्पर मतभेद रहणार.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी अधूरे

कार्य पूर्ण नाय होणार तसेच इच्छित परिणाम नाय भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी होणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणार असा समय व्यापार साठी अनुकूळ नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी तसेच सहयोग नाय भेंटणार, मित्र बरोबर वांछित लाभ नाय भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साझेदारांचा कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अतः धैर्य बरोवर समय व्यतीत करावे.